4:12-19

मसीह के दुःखों में संभागी होना : अपने आप को विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता पर छोड़ देना (भाग 1)

इस पत्री में पहले भी दो बार, पतरस ने अपने पाठकों के दुःख उठाने को संबोधित किया था (1:6-9; 3:13-17)। यह सत्य है कि 1:6-9 की भाषा "आग से" परखे जाने को कहती है, जैसे कि 4:12 में। किंतु फिर भी, इस विचार से बचना कठिन है कि निम्न शब्द, स्पष्ट और तीव्र होने के साथ, दुःख भोगने के प्रसंग को एक नए स्तर पर ले जाते हैं।

मसीह के दुःखों में संभागी होना (4:12-16)

[12]हे प्रियो, जो दुःख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है, इस से यह समझकर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है। [13]पर जैसे-जैसे मसीह के दुःखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिससे उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो। [14]फिर यदि मसीह के नाम के लिये तुम्हारी निन्दा की जाती है तो तुम धन्य हो, क्योंकि महिमा का आत्मा, जो परमेश्वर का आत्मा है, तुम पर छाया करता है। [15]तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुःख न पाए। [16]पर यदि मसीही होने के कारण दुःख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे।

आयत 12. इन शब्दों में दी गई दुःखों की तीव्रता 1:6-9 में दी गई तीव्रता से भिन्न नहीं है।[1] यह मान लेने से, यहाँ स्पष्ट है कि 4:12-16 के शब्द एक ऐसी तीव्रता को प्रतिबिंबित करते हैं जो 3:13, 14 से बनती आ रही है। पतरस ने अपने पाठकों से 3:13, 14 में कहा कि यदि उन पर दुःख आए तो यह आश्चर्य की बात होगी। उसने पूछा, "यदि तुम भलाई करने के लिये उत्तेजित रहो तो तुम्हारी बुराई करनेवाला फिर कौन है?" अपेक्षित उत्तर था, "अवश्य ही,कोई भी नहीं!" यद्यपि प्रेरित ने 3:13, 14 में धार्मिकता के लिए दुःख उठाने की संभावना को

खुला रखा, उसने यह स्पष्ट किया कि ऐसा होने की आशा कम ही है। अब, यहाँ 4:12 में प्रेरित ने उन्हीं पाठकों से कहा **जो दुःख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है।** इस से यह समझकर अचंभा न करो। हम यहाँ बात के ज़ोर में आए परिवर्तन को कैसे समझें? एक अच्छे विश्वास के साथ पतरस के विचार को 3:13 से लेकर 4:16 तक चलना दिखाता है कि 3:13, 14 और 4:12-16 के मध्य तनाव उतना बड़ा नहीं है जितना आरंभ में प्रतीत होता है।

पतरस ने 3:9 में अपने पाठकों से निवेदन किया था कि वे भक्ति का जीवन जीएं, "कभी बुराई के बदले बुराई" नहीं करें। उसने अपने पाठकों के प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा की। उस अन्यजाति मूर्तिपूजक समाज से उन्हें भक्ति के बदले केवल दुःख ही मिला था। प्रेरित ने यह माना कि कभी-कभी ऐसा होता है, परन्तु यह सामान्यतः रखी जाने वाली आशा नहीं है। सामान्यतः अन्यजाति मूर्तिपूजक पड़ोसी दयालुता, व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा, तथा आत्म-संयम का आदर करते। किंतु फिर भी मसीहियों द्वारा अपनाए गए ईश्वरीय मार्ग के प्रति अन्यजाति मूर्तिपूजकों का प्रतिरोध होना था। जब मसीही अपने पड़ोसियों के साथ अपने पुराने गैर-मसीही जीवन के व्यवहार में सम्मिलित नहीं होते हैं, तो इससे कुछ को बुरा लग सकता है (4:4)। पतरस ने पहचाना कि उसके पाठकों ने पवित्रता के जिस जीवन को अपनाया था वह अन्यजाति मूर्तिपूजकों की अनैतिकता पर दोषारोपण था। परिणामस्वरूप कुछ उनसे द्वेष रखते, उन्हें बुरा भला कहते।

पतरस से अधिक स्पष्टता से यूहन्ना ने मसीहियों के दुःखों में पड़ने के कारण को स्पष्ट किया, यद्यपि उन्होंने नैतिक जीवन को अपनाने से बढ़कर और कुछ भी नहीं किया है। यूहन्ना ने कैन द्वारा की गई हत्या के संबंध में कहा, "और उसे किस कारण घात किया? इस कारण कि उसके काम बुरे थे, और उसके भाई के काम धर्म के थे। हे भाइयों, यदि संसार तुम से बैर करता है तो अचंभा न करना" (1 यूहन्ना 3:12ब, 13)। यह सब सत्य होने के कारण, मसीही या तो स्वयं अपनी दयनीय दशा के विचारों में फंस सकते थे, या फिर उन नैतिक सिद्धांतों के साथ समझौता कर सकते थे जिनकी ओर प्रभु ने उन्हें बुलाया है। पतरस को इनमें से कोई भी विकल्प स्वीकार नहीं था। इसीलिए उसने वह लिखा जो 1 पतरस 3:13, 14 में लिखा है।

सामान्यतः, आदरणीय जीवन जीने के लिए मसीहियों को दुःख नहीं उठाना पड़ता। यह सत्य है, यद्यपि मसीही आचरण संसार पर दोषारोपण है। इस 3:13, 14 में दी गई काल्पनिक परिस्थिति की तुलना में, 4:12 में प्रेरित ने अपने पाठकों द्वारा अनुभव की जाने वाली कठोर वास्तविकता का सामना किया। उसने इस खण्ड का आरंभ एक स्नेही अभिव्यक्ति हे प्रियों (जो ἀγαπητός, *अगापेतोस* से है) से किया, जैसा उसने 2:11 में किया था। उसने यह माना कि कभी-कभी मसीहियों को सही करने पर भी दुःख उठाना पड़ेगा, परन्तु इससे उनके विश्वास को कोई चुनौती नहीं होनी चाहिए। यह जानने से कि उनके पड़ोसी "अचम्भा करते हैं कि तुम ऐसे भारी लुचपन में उनका साथ नहीं देते" (4:4), उन्हें उस "दुःख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है" के

लिए आश्चर्य नहीं करना चाहिए।

पतरस द्वारा अपने पाठकों के दुःखों के वर्णन और आरंभिक द्वितीय शताब्दी में प्लिनी नामक रोमी अधिकारी के अभिलेखों के विवरणों में रोचक समानताएं हैं। इस अधिकारी को बहुधा, अपने रिश्तेदार प्लिनी वरिष्ठ से, जो उसका समकालिक भूगोल शास्त्री था, भिन्न दिखाने के लिए प्लिनी लघु कहा जाता है। प्लिनी लघु को सम्राट ट्राजन ने रोमी प्रांत बिथुनिया में भेजा जिससे वह वहाँ के शहरों की आर्थिक तथा प्रशासन की आंतरिक बातों को ठीक करे। राज्यपाल होने के अपने दायित्वों को निभाते समय, प्लिनी ने ट्राजन को अनेक पत्र लिखे, जिनमें उन चुनौतियों का जो उसके सामने थीं वर्णन दिया गया था और परामर्श माँगा गया था। अपने एक पत्र में उसने उस बात का वर्णन किया जिसे वह मसीही संकट मानता था।[2]

प्लिनी के सामने परिस्थिति थी कि अन्यजाति मूर्तिपूजा के मंदिर बहुत कम प्रयोग में आ रहे थे, उनकी देख-भाल नहीं हो रही थी। मंदिर जीर्ण हो रहे थे क्योंकि बहुतेरे अन्यजाति मूर्तिपूजक मसीह की ओर मुड़ गए थे। राज्यपाल ने ट्राजन को बताया कि उसने मसीहियों को सभाएं करने से मना किया है। इससे उसे प्रोत्साहन मिला क्योंकि लोग मंदिरों में फिर से आने लगे थे। परन्तु उसे सम्राट से परामर्श की आवश्यकता थी क्योंकि वह मसीहियों द्वारा किए जाने वाले किसी अपराध के बारे में जानकारी नहीं जुटा पाया था। क्या मसीह का नाम लेना अपने आप में पर्याप्त अपराध था? उसने कहा कि जब कोई मसीही होने का दोषी होता था, तो वह उस दोषी को अपना बचाव रखने को कहता था। यदि वह मसीही होने से इनकार करता, या वह कहता कि वह पहले मसीही था परन्तु अब नहीं है, तो प्लिनी उस से कैसर के प्रति प्रभु भक्ति दिखाने के लिए कहता, और ऐसा होने पर उसे छोड़े देता। यदि दोषी मसीही होना स्वीकार कर लेता, तो प्लिनी अपना प्रश्न तीन बार उसके सामने दोहराता। फिर भी यदि दोषी इनकार नहीं करता था, तो राज्यपाल उसे मृत्यु दण्ड दे देता था।

प्लिनी के पत्र 1 पतरस के लिखे जाने के मात्र पचास वर्ष बाद के हैं। साथ ही वे उन प्रांतों में से एक से हैं जहाँ पतरस के पाठक रहा करते थे। राज्यपाल के पत्र प्रश्न उठाते हैं। क्या ऐसे अन्य रोमी राज्यपाल, या ऐसे स्थानीय नागरिक प्रशासक रहे थे जिन्होंने प्लिनी के समान ही पहले भी किया था? अधिकारियों द्वारा मसीहियत को किस समय से एक महत्वपूर्ण संकट के समान देखा जाने लगा? यद्यपि ऐसा संभव है कि पतरस द्वारा संबोधित परिस्थिति के समय आधिकारिक सताव उतना विकट नहीं था जितना कि प्लिनी ने वर्णन किया है, परन्तु राज्यपाल के पत्र हमें अन्यजाति मूर्तिपूजक समाज द्वारा मसीहियत के प्रति रोचक अन्तदृष्टि प्रदान करते हैं। वे परदेशी, विघटनकारी, तथा स्थापित धर्मों के लिए खतरा थे। उनकी विधियाँ सबसे पृथक और रोषकारी थीं। यह नया धर्म, या अन्धविश्वास, जैसा कि अन्यजाति मूर्तिपूजक उन्हें समझते थे, अनुरूप नहीं था।

प्लिनी का पत्र संकेत करता है कि पतरस के पाठक जिस "अग्नि परीक्षा" से

हो कर निकल रहे थे वह एक से अधिक की ओर से थी। एक ओर तो, संभवतः उन स्थानीय लोगों की अनाधिकारिक असहिष्णुता तथा दोष लगाना था जो कलीसिया के बारे में बहुत कम जानते थे। दूसरी ओर, संभवतः आधिकारिक स्रोतों से भी सताव होता था। यह कहने के बाद भी, यह मानना कठिन है कि मसीहियों के प्रति कोई आधिकारिक रोमी नीति निर्धारित थी, कम से कम इतने आरंभिक समय में तो नहीं। संभव है कि जब प्लिनी मसीहियों से कैसर की प्रतिमा के सामने बलिदान चढ़ाने को कहता था तब वह किसी पूर्ववर्ती उदाहरण का अनुसरण कर रहा हो, यह भी संभव है कि उसने ही यह प्रथा आरंभ की हो।

जब पतरस ने 1:6-9 में अपने पाठकों के सताव को उठाया, तब उसने कहा कि उन्होंने परेशानियों का सामना "अपने विश्वास के प्रमाण" के लिए किया था। यही तात्पर्य यहाँ भी है। प्रेरित ने अपने पाठकों को आश्वस्त किया कि जिस "अग्नि परीक्षा" का वे सामना कर रहे थे वह उनके ऊपर उन्हें परखने के लिए आई थी। यह नहीं कि परमेश्वर मनमाने ढंग से परीक्षा भेजता है। वरन, परमेश्वर विश्वासियों पर परीक्षाएं इसलिए आने देता है जिससे परिणामस्वरूप ऐसे मसीही निकल कर आएं जो, पहले की अपेक्षा अब, विश्वास में और भी अधिक ठोस हों, अपने द्वारा चुने गए जीवन मार्ग के प्रति और अधिक समर्पित हों। इस रीति से यह उन्हें "परखने" के लिए था। वे उन परीक्षाओं से निकलने से परखे और स्थापित माने गए। पतरस के पाठकों को अपनी परीक्षाओं को दो कारणों से अनोखा नहीं समझना चाहिए: (1) उनके जीवन का भला होना अन्यजाति मूर्तिपूजकों के अनैतिक जीवन पर दोषारोपण था। (2) परमेश्वर ने परीक्षाओं को आने दिया था जिससे उनका विश्वास, परखे जाने के पश्चात, और भी अधिक दृढ़ हो सके।

आयत 13. मसीही के लिए यह अपेक्षित है कि यीशु की जीवन शैली को अपनाने पर सताव भी आएगा। यीशु ने कहा था, "धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं" (मत्ती 5:11) पौलुस ने कहा, "अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं, जो तुम्हारे लिये उठाता हूं, और मसीह के क्लेशों की घटी उस की देह के लिये, अर्थात कलीसिया के लिये, अपने शरीर में पूरी किए देता हूं" (कुलुस्सियों 1:24)। अगुवों को लिखी अपनी पत्रियों में वह सुस्पष्ट है: "पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे" (2 तीमुथियुस 3:12)। यदि यीशु को भक्तिहीन मनुष्यों से इसलिए सहना पड़ा क्योंकि वह परमेश्वर को भावता हुआ जीवन व्यतीत करना चाहता था, तो यह अनपेक्षित नहीं है कि उसके अनुयायी भी उसी के समान सताए जाएंगे। "जो बात मैं ने तुम से कही थी, कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, उसको याद रखो: यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएंगे; यदि उन्होंने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी भी मानेंगे" (यूहन्ना 15:20)। पतरस ने दावा किया कि सताव आनन्द को प्रबल करता है; उसे कभी घटाता नहीं है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि पतरस ने लिखा **पर जैसे-जैसे मसीह के दुःखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो**।

जैसे 1:7 में, पतरस ने अपने पाठकों को स्मरण कराया कि मसीह के नाम में जिस सताव का वे अनुभव कर रहे हैं वह मसीह के साथ उनकी सहभागिता को निश्चित करता है। उसके साथ दुःख उठाना इस बात का आश्वासन है कि, **उसकी महिमा के प्रकट होने पर**, वे **आनन्दित** होंगे। प्रेरित ने दो बार "आनन्द" शब्द का प्रयोग किया। उसने कहा, अभी "आनन्दित रहो," जिससे कि "उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो।" लेकिन जो आनन्द विश्वासी इस युग में अनुभव करता है वह उस आनन्द की तुलना में जो प्रभु के प्रकट होने पर होगा, कुछ भी नहीं है। पतरस ने क्रियाओं को एक के ऊपर एक करके रखा। जब प्रभु लौट कर आएगा, तो आनन्द की अत्यधिक भरपूरी होगी - **मगन होने के साथ**। न केवल यहाँ पर, परन्तु मत्ती 5:12 और प्रकाशितवाक्य 19:7 में भी, क्रियाएं "आनन्द" (χαίρω, *खैरो)* और "मगन" (ἀγαλλιάω, *अगल्लिओं)* एक साथ प्रयोग हुए हैं। "मगन" का अनुवाद "आनन्दित होना" या "अत्यधिक आनन्दित" भी किया गया है।

केवल आनन्द ही वह भाव नहीं था जो पतरस चाहता था कि उसके पाठक अनुभव करें। विजय भी वहाँ थी। जैसे यीशु दुःखों में भी विजयी हुआ, विश्वासी भी होंगे। आनन्द की अत्यधिक भरपूरी प्रभु के क्रूस पर चढ़ाए जाने की समझौता विहीन विजय का प्रतिफल है। इस वर्तमान युग में महिमा पूर्वानुभव है, यद्यपि यह सताव में अनुभव होने वाला आनन्द है। मसीही अभी भी मसीह के साथ पाप और मृत्यु पर विजय के आनन्द में संभागी है। फिर भी प्राप्त करने के लिए उसमें जो अभी नहीं है और भी कुछ है। विश्वासी "उसके प्रकट होने की महिमा" की आशा में जीते हैं और उनके आनन्द के परिपूर्ण होने के। पौलुस के विचार पतरस के विचार से अधिक भिन्न नहीं थे जब उसने लिखा, "... जब कि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं" (रोमियों 8:17)।

आयत 14. कुछ मसीही परंपराओं में सिखाया जाता है कि दुःख उठाना अपने आप में एक सदगुण है। पतरस ने कोई संकेत नहीं दिया कि पवित्रता किसी रीति से दुःख से बढ़ जाती है या फिर इस इच्छा से अपने आप को आनन्द देने वाली किसी वस्तु से वंचित रखने से। जब कोई मसीह को जानता है और इससे आदरणीय और सीधा जीवन व्यतीत करता है, तो **वह मसीह के नाम के लिए निन्दित होने पर** आनंदित हो। जब वे, जो इस संसार की रीति पर चलते हैं, मसीहियों के विषय बुरा बोलते हैं, जब वे उन पर भले लोगों के अनुपयुक्त लांछन लगाते हैं और झूठे दोषारोपण द्वारा उनकी प्रतिष्ठा को कलंकित करते हैं, जब वे जैसे उन्होंने प्रभु के साथ किया था वैसे ही मसीहियों की भी निन्दा करते हैं, जब मसीही ऐसी बातों को सहन करते हैं, तो आशीष होती है।

वाक्यांश "मसीह के नाम के लिए" रोचक है। प्राचीन लोगों के लिए, नाम का बहुत महत्व था, यह किसी जानकार के साथ कुछ जोड़ देने भर की बात नहीं थी। किसी के नाम पर कुछ करने का तात्पर्य था जिसका नाम लिया जा रहा है उस व्यक्ति को सौदे में सम्मिलित कर लेना। उनका मानना था कि किसी को किसी के नाम में शापित करने का अर्थ था एक ऐसी सामर्थ्य को साथ लगा देना जो उस

श्राप को पूरा कर देगी। नाम केवल विचारों में एक चित्र ही नहीं बनाते थे; किसी का नाम एक रहस्य वादी रीति से उसके व्यक्तित्व का विस्तार होता था। संसार के इस दृष्टिकोण के आधार पर, "मसीह के नाम के लिए निन्दित होना" मसीह के लिए निन्दित होने के समान था।

पतरस के समान, याकूब ने भी नाम के महत्व का चित्रण करते हुए पूछा, "क्या वे उस उत्तम नाम की निन्दा नहीं करते जिस के तुम कहलाए जाते हो?" (2:7)। नाम को महत्व देने में बाइबल के लेखक अकेले नहीं हैं। प्लिनी लघु ने जानना चाहा कि क्या मसीहियों को उनके द्वारा किए गए अपराधों के लिए दोषी मानना था, अथवा जिस नाम को वे धारण किए हुए थे वही अपने आप में पर्याप्त अपराध था (देखें 4:12 पर दी गई टिप्पणी)। पतरस ने सुझाया कि उसके पाठकों के जानकार केवल वह नाम धारण करने से ही अप्रसन्न हो जाते थे। ऐसों के लिए उसने पहले कहा था "पर वे उसको जो जीतों और मरे हुओं का न्याय करने को तैयार है, लेखा देंगे" (4:5)। जब भक्त मसीही "यीशु का नाम" धारण करने पर निन्दित होते थे, तो इसमें आशीष थी।

यद्यपि पाठकों के लिए अंग्रेज़ी अनुवाद इसे सरल बना देते हैं, 4:14 का अन्तिम भाग यूनानी भाषा का एक बेढंगा वाक्यांश है। इसका शब्दार्थ है, "क्योंकि वह महिमा का और परमेश्वर का आत्मा तुम पर वास करता है।" शब्द "वह" (τό, *tó*) अलिंगी एकवचन वर्ग है। इसका तात्पर्य हो सकता है "महिमा की वस्तु और परमेश्वर का आत्मा।" अन्य अनुवादों के साथ NASB भी व्याकरण की समस्या के समाधान के लिए वर्ग के दोहराए जाने की उपेक्षा करते हुए इस वाक्यांश को **महिमा का आत्मा तथा परमेश्वर का भी तुम पर वास करता है** अनुवाद करता है। संभवतः वह अतिरिक्त वर्ग किसी आरंभिक लिपिक द्वारा अनजाने में लिखा गया होगा। यह धारणा अधिकांश अनुवादों की है, परन्तु लेख का प्रमाण दोनों वर्ग के साथ होने की बहुतायत से पुष्टि करता है।

एडवर्ड गॉर्डन सेल्वेन का तर्क है कि इन शब्दों का अनुवाद "महिमा की वस्तु और परमेश्वर का आत्मा तुम पर वास करता है" होना चाहिए।[3] उनका मानना है कि इस वाक्यांश को पतरस ने यहूदी भक्ति से लिया है। पतरस के समय से पहले रब्बियों ने अत्यधिक पवित्रता से संबंधित बातों में परमेश्वर की उपस्थिति के लिए शब्द शेकाइनाह को दिया था। जब मूसा व्यवस्था की पट्टियों को हाथों में लिए हुए सिनै पर्वत से उतरकर इस्राएलियों की छावनी में वापस आया था तो उसके चारों ओर शेकाइनाह थी (देखें निर्गमन 34:29, 30)। सेल्वेन ने तर्क दिया कि पतरस अपने पाठकों से कह रहा था स्वयं परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति उनके ऊपर थी, परमेश्वर के आत्मा के साथ।

इसके विपरीत मिकाइल्स का मानना था कि पतरस ने यशायाह 11:1, 2 की भाषा को अपनाया था, जो सामान्यतः मसीह पर लागू की जाने वाली भाषा थी, और उसे मसीहियों पर लागू कर दिया।[4] सेल्वेन की व्याख्या की माँग है कि पतरस रब्बियों द्वारा अर्थ लगाए जाने की बारीकियों से भली-भांति अवगत हो, जिसके लिए बहुत कम समर्थन है। मिकाइल्स की व्याख्या की माँग है कि पतरस

ने तब मानी जाने वाली यशायाह 11:1, 2 की व्याख्या को काफी बदल दिया था, जो एक ऐसा समाधान है जिसे अनुमान से अधिक नहीं माना जा सकता है। समस्या का सबसे संतोषजनक समाधान है कि अधिकांश अनुवादों की पद्धति का अनुसरण किया जाए। इस आधार पर, दूसरा वर्ग लेख में लिपिक की भूल से आ गया।

पतरस यह कहता प्रतीत होता है कि जब कोई विश्वासी की मसीह के लिए उपहास या निन्दा होती है, तो परमेश्वर से उस पर अनुग्रह और आशीष किसी रीति से या सामान्य से अधिक वास करती हैं। संभवतः उसके कहने का अर्थ था कि जैसे-जैसे मसीही की आत्मिक संसाधनों की आवश्यकताएं बढ़ती जाती हैं, परमेश्वर उन्हें उपलब्ध करवाने के लिए उपस्थित रहता है। न केवल परमेश्वर अपने लोगों से आज्ञाकारिता माँगता है, वह उन्हें आज्ञाकारी रहने के लिए सामर्थ्य भी प्रदान करता है। मनुष्य की आत्मा और परमेश्वर के आत्मा के मध्य पारस्परिक व्यवहार का मनोविज्ञान व्याख्या करने से परे है, परन्तु प्रतिज्ञा स्पष्ट है। साथ ही किसी मसीही को यह मान कर नहीं चलना चाहिए कि उसके द्वारा बनाए गए पापों की उलझनों से परमेश्वर उसे निकाल ही लेगा। मनुष्य के उत्तरदायित्वों और चुनावों का विश्वासी के अन्दर रहने वाले परमेश्वर के आत्मा के परस्पर संवाद का क्या माध्यम हो, यह भी ऐसा मामला है जिसे परमेश्वर की बुद्धिमत्ता पर छोड़ देना चाहिए।

आयत 15. इस पूरी पत्री में पतरस की चिंता रही कि उसके पाठक ऐसा अनुकरणीय जीवन व्यतीत करें कि उनके विरुद्ध कोई लांछन न लगा सके (2:12, 20; 3:17)। मानवीय निर्बलता होने के कारण, प्रवृत्ति रहती है कि जब कोई अपमान या निन्दा करे तो उसका बदला उसी प्रकार से लिया जाए। इससे पहले पतरस ने यीशु के उदाहरण की ओर संकेत किया था। जब उसे गाली दी गई, तो "वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था" (2:23)। साथ ही, यह संभव नहीं कि मसीह की ओर परिवर्तित होने वाला प्रत्येक जन पवित्रता के प्रति उतनी ही गंभीरता से समर्पित हो जैसी इच्छा की जाती है। जब निर्दोष होने पर भी मसीही दुःख उठाते हैं, जब वे मसीह का नाम लेने के कारण तथा वैसा जीवन जीने के कारण जैसा प्रभु चाहता है दुःख उठाते हैं, तो इससे महिमा होती है। परन्तु यह लज्जाजनक है जब मसीह का अनुसरण करने का दावा करने वाले मसीह के पीछे छिप कर अपने बुरे कार्यों को उचित ठहराने का प्रयास करते हैं। पतरस के कहने का तात्पर्य था, "जो उदाहरण तुम संसार के समक्ष रखते हो उसके प्रति संवेदनशील बनो।" "यह स्मरण रखो कि जब तुम गलत करते हो, तो तुम्हारा उदाहरण समस्त मसीही काया पर प्रतिबिंबित होता है, और प्रभु पर भी।"

पतरस सुनिश्चित था। उसने चार ऐसी बातों की सूची दी जो मसीही को कभी भी करने का दोषी नहीं होना है। असमंजस में डालने वाली बात है इस सूची के अन्तर गत हो सकने वाले कार्यों का क्षेत्र। प्रेरित ने लिखा, **तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर न हो।** पाप के ये विषय इतने कुख्यात हैं कि इनका

उल्लेख करने की आवश्यकता ही नहीं है। क्या कोई भी, सबसे लापरवाह मसीही भी, हत्या या चोरी को उचित ठहराने का प्रयास कर सकता है? तीसरा विषय **कुकर्मी** होना, इतना विस्तृत है कि अपने आप में इसका कोई विशिष्ट अर्थ नहीं है। यदि किसी शब्द के बहुत से अर्थ हो सकते हैं तो उसका कोई अर्थ नहीं होता है। चौथी अभिव्यक्ति, **पराए काम में हाथ डालने वाला**, पतरस द्वारा ही बनाई गई हो सकती है। इससे पहले यह अभिव्यक्ति यूनानी साहित्य में कहीं नहीं आई। पतरस के लिखने के दो शताब्दी के बाद, इस शब्द को कुछ बार अर्थ "हस्तक्षेप करने वाला" माना गया है, परन्तु पतरस का क्या तात्पर्य था यह भली-भांति निश्चित नहीं है।

इसका कोई विशेष महत्व नहीं भी हो सकता है, परन्तु पतरस ने शब्द "जैसा" (ὡς, *होस)* को अन्तिम विषय से पहले दोहराया, यद्यपि अनुवाद इसे दिखाते नहीं हैं। हो सकता है कि यह मात्र शैली की बात हो, परन्तु "जैसा" के दोहराए जाने का अर्थ हो सकता था कि पतरस अपने पाठकों को उस बात पर विशेष ध्यान लाने को कह रहा हो। पहले तीनों विषयों का साधारण होना यह संकेत करने वाला हो सकता है कि वे उस अन्तिम शब्द को महत्वपूर्ण बनाने के लिए की गई शब्दों की सुसज्जा थी। वह वास्तविक विषय जिस पर पतरस चाहता था कि उसके पाठक ध्यान लगाएं था कि उनमें से कोई भी "पराए काम में हाथ डालने" वाला न हो। अन्य अनुवादों में "हस्तक्षेप करने वाला" (NIV) और "हानि करने वाला" (NRSV) आया है।

पतरस की चौथी अभिव्यक्ति, "पराए काम में हाथ डालने" वाला यूनानी शब्द ἀλλοτριεπίσκοπος *(अल्लोत्रीपिस्कोस)* से आया है। यह मिश्रित शब्द है जो दो यूनानी शब्दों से बना है। इस शब्द का पहला भाग ἀλλότριος *(अल्लोत्रियोस)* से आया है जो एक विशेषण है जो किसी वस्तु का किसी अन्य के होने को दिखा सकता है। वैकल्पिक रूप से यह व्यक्ति को परदेशी या, शत्रु होने को भी दिखा सकता है। शब्द का दूसरा भाग है ἐπίσκοπος *(एपिस्कोपोस),* वह शब्द जिसे 1 पतरस 2:25 में "रखवाला" अनुवाद किया गया है। फिलिप्पियों 1:1, 1 तीमुथियुस 3:2, और अन्य स्थानों पर इसका अनुवाद KJV "बिशप" करती है। जब कि NASB और NIV इसे "रखवाला" करते हैं। यूनानी साहित्य में एप्सिकोपोस वह व्यक्ति होता था जिसे किसी विजेता या लागू सरकारी अध्यादेश की ओर से परिस्थिति का प्रभारी बनाया जाता था। वह किसी युद्ध की विजय या भूकंप के कारण नाश हो गए शहर का प्रभारी हो सकता था। उसका कार्य होता कि वह उस शहर के प्रशासन और वहाँ की आधारभूत संरचना के पुनः बनाए जाने की देखभाल करे।

इन दोनों अभिव्यक्तियों को मिलाने के द्वारा, संभवतः पतरस अपने पाठकों को निर्देश दे रहा था कि वे अपने काम से काम रखें। हो सकता है कि उसके पाठक आवश्यकता से अधिक उत्साही होकर, गलियों के नुक्कड़ और अन्य सामाजिक स्थानों पर खड़े होकर जो मूर्तिपूजा और अनैतिकता उन्हें दिखाई देती थी उसकी निन्दा करते थे। "हो सकता है कि वह ऐसे मसीहियों को जानता हो जो अपने

आप को सामाजिक नैतिकता के रखवाले समझते थे।"[5] ऐसा व्यवहार अन्यजाति मूर्तिपूजकों के विरोध को और तीव्र कर देता। इससे विश्वासियों के लिए अनुचित सताव भी आता। फिर भी, शब्द "अल्लोत्रीपिस्कोस" तुलना में हलके शब्दों "हानि करने वाला" या "हस्तक्षेप करने वाला" से अधिक तीव्र हो सकता है। यह शब्द उन के और अधिक निकट हो सकता है जिन्हें हम आंदोलनकारी, विरोधी, या क्रांतिकारी भी कहते हैं।

पत्री में संकेत हैं कि पतरस और उसके पाठक उस समय के शासन को लेकर उत्साही नहीं थे। प्रेरित ने 2:13-17 में आवश्यक समझा कि अपने पाठकों से कहे कि वे अधिकारियों के प्रति आदरपूर्ण और समर्पित रहें।[6] क्या यह संकेत है कि कुछ मसीही ऐसा समझते थे कि यदि वे रोमी शासन का विरोध कर सकें तो ऐसा करने के लिए वे कर्तव्य-बाध्य हैं? इससे आगे, 5:13 में पतरस ने अपने अभिवादन "वह" (संभवतः बाबुल की कलीसिया) से भेजे। यदि पतरस को लगता था कि उसके पाठक समझ लेंगे कि बाबुल रोम है, तो उसने रोमी संसार और रोमी शासन के बारे में अपनी और उनकी राय से संबंधित महत्वपूर्ण वक्तव्य दिया है। इस बात पर संपूर्ण ध्यान दिया जाना चाहिए कि जिन चार बातों को पतरस ने अपने पाठकों से बचकर रहने को कहा, उनमें से अंतिम के लिए उन्हें विशिष्ट निर्देशों की आवश्यकता थी। इसके आगे, जो निर्देश उन्हें चाहिए था वह था कि उन्हें उस शासन का विरोधी नहीं होना है जिसके अन्तर गत वे रहते हैं। यद्यपि वह शासन उन सब के लिए अत्यधिक अप्रिय था, व्यवस्थित सरकार विश्वासियों के लिए आशीष थीं।

आयत 16. नए नियम में अभिव्यक्ति मसीही तीन बार मसीह के अनुयायियों के लिए प्रयुक्त हुई है। इस से अतिरिक्त शेष दोनों प्रयुक्तियाँ प्रेरितों के कार्य में हैं। जब सीरिया के अन्ताकिया की मुख्यतः अन्यजाति कलीसिया जवान ही थी (लगभग 45 ई.), लूका ने लिखा है कि "चेले सब से पहिले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए" (प्रेरितों 11:26)। अभिव्यक्ति "कहलाए" (χρηματίζω, *ख्रेमाटीज़ो)* का अर्थ "दैवीय कहलाना" भी हो सकता है। संभव है कि वहाँ रहने वाले भविष्यद्वक्ताओं में होकर परमेश्वर ने यह नाम प्रकट किया हो। लगभग पंद्रह वर्ष पश्चात पौलुस ने अग्रिप्पा II के समक्ष अपना बचाव किया। प्रेरित के प्रश्न के प्रत्युत्तर में अग्रिप्पा ने कहा, "तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है" (प्रेरित 26:28)। हो सकता है कि राजा ने यह उपहास में कहा हो, हो सकता है कि यह टिप्पणी प्रश्न के समान की गई, या यह भी संभव है कि इसे गंभीरता के साथ कहा गया हो। अर्थ अस्पष्ट है। जो स्पष्ट है वह है कि शब्द "मसीही" विश्वासियों के लिए प्रथम शताब्दी के अन्त और द्वितीय के आरंभ के समय तक सामान्यतः प्रयुक्त होने वाला शब्द नहीं था। इग्नेशियस ने इस शब्द को अपने पत्रों में अनेक बार प्रयोग किया,[7] और यह एक बार *Didache* (डीडाखे)[8] में भी मिलता है - इन सब को सामान्यतः 115 ई. से पूर्व का माना जाता है। दूसरी शताब्दी के आरंभ में, गैर-मसीही लतीनी लेखक जैसे टैसिटस, सुइतोनियस, और प्लिनी ने भी इस शब्द का खुला प्रयोग किया है। आरंभिक दिनों में अन्यजाति

मूर्तिपूजकों द्वारा "मसीही" शब्द का प्रयोग कलंक के रूप में किया गया होगा। जो भी हो, विश्वासियों ने इस नाम को बिना किसी हिचकिचाहट के स्वीकार कर लिया।

इसमें कोई लज्जा नहीं है, इसके विपरीत इसमें आशीष है जब किसी को मसीही होने के लिए दुःख उठाना पड़े। पतरस जानता था कि उसके पाठक बड़ी अस्थिर दशा में है क्योंकि उन्होंने एक धर्म और उसके साथ एक जीवन शैली अपना ली थी जिसके कारण वे अपने समकालिक लोगों में विचित्र और असामाजिक प्रतीत होते थे। लोगों, प्राचीन या आधुनिक, के जीवनों में धर्म सबसे अधिक रूढ़िवादी बातों में से एक है। जो किसी नए धर्म को अपनाते हैं वे संदेह और अविश्वास के लिए प्रमुख उम्मीदवार हो जाते हैं। उन्हें ही समाज की बुराइयों, और यहाँ तक कि प्राकृतिक आपदाओं के लिए भी उत्तरदायी ठहराया जाता है। पतरस ने कहा कि यदि किसी को दुःख उठाना पड़ रहा है, तो यह अपेक्षित है। मसीही होने के नाते हमें अपने जीवन इतने अनुकरणीय रखने हैं कि कोई हम पर कुछ गलत करने का आरोप न लगा सके। हमारे नैतिक जीवनों में, हमारी सामाजिक उत्तरदायित्वों में, प्रशासनिक अधिकारियों के प्रति हमारे आदर में, हमारे पारिवारिक जीवनों में - जो कुछ भी हम करते हैं, उसमें हमें किसी को भी हम से घृणा करने या दुर्व्यवहार करने का कोई कारण नहीं देना चाहिए। यदि, यह सब करने के पश्चात, हम मसीही होने के कारण दुःख उठाते हैं, तो हमें **लज्जित नहीं होना चाहिए**।

जब उसे दुःख उठाना पड़े तो मसीही का प्रत्युत्तर होना चाहिए कि वह **इस नाम में परमेश्वर की महिमा करे**। उसे परमेश्वर को महिमा देनी चाहिए क्योंकि वह दुःख प्रमाण है कि उसका अंगीकार और व्यवहार संसार पर प्रभाव डाल रहा है। यीशु ने कहा, "हाय, तुम पर; जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें, क्योंकि उन के बाप-दादे झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसा ही किया करते थे" (लूका 6:26)। जब उसने अपने जीवन को ऐसे सिद्धांतों पर बनाया है जो संसार की मान्यताओं और व्यवहार को दोषी ठहराते हैं, तो कोई यह आशा नहीं रख सकता है कि उसे किसी प्रतिरोध का सामना करना नहीं पड़ेगा। अपने आप में दुःख उठाने का कोई महत्व नहीं है; परमेश्वर भक्ति की गवाही के लिए दुःख उठाना "परमेश्वर की महिमा" करने का अवसर है। इसका अर्थ है कि परमेश्वर का राज्य मनुष्यों में कार्यान्वित हो रहा है।

पतरस ने 4:14 में कहा था कि जो "मसीह के नाम के लिए" निन्दा सहते हैं वे धन्य हैं। क्या "यह नाम" वह नाम है जिसमें होकर उसे परमेश्वर की महिमा करनी है, मसीह के नाम का उद्धरण है, या संभवतः परमेश्वर के नाम का भी? हो सकता है, परन्तु जो नाम और भी अधिक निकट है वह है "मसीही।" पतरस का उद्धरण संकेत करता है कि ई. 60 के दशक के मध्य में विश्वासियों ने इस नाम को स्वीकार करना आरंभ ही किया था। तब जो यहूदी और अन्यजाति मूर्तिपूजक थे वे इस नए धर्म और उसके मानने वालों का निरा तिरस्कार करते थे। उनके लिए, "मसीही" शब्द पर प्रतिक्रिया अविश्वास के साथ सिर का हिलाना या क्रोध में

तमतमाया चेहरा होता था। पतरस के लिए, यह कोई लज्जा की बात नहीं थी। जब "इस नाम" में विश्वास के अंगीकार के साथ दुःख उठाना होता था, तो वह और उसके पाठक परमेश्वर की महिमा करते थे।

विश्वासयोग्य सृजनहार के हाथों में आत्मा को सौंपना (4:17-19)

[17]क्योंकि वह समय आ पहुँचा है कि पहले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए; और जब कि न्याय का आरंभ हम ही से होगा तो उनका क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते? [18]और यदि धर्मी व्यक्ति ही कठिनाई से उद्धार पाएगा, तो भक्तिहीन और पापी का क्या ठिकाना? [19]इसलिये जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुःख उठाते हैं, वे भलाई करते हुए अपने-अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृजनहार के हाथ में सौंप दें।

वर्तमान में दुःख है, भविष्य में महिमा की प्रतिज्ञा है। मसीहियों के दुःख उठाने के लिए प्रेरित का अविरल प्रत्युत्तर था अन्त समय की ओर देखने का निवेदन करना। नए नियम में परलोक विद्या वर्तमान में मसीही जीवन की माँग और आने वाले युग में जीवन की आशा की सेवा करती है। पतरस और उसके पाठकों के लिए, आने वाला युग कोई निराधार बात नहीं थी। वह इस संसार में प्रकट होना आरंभ हो चुकी थी। प्रभु का आगमन निकट था (4:7)।

आयत 17. नए नियम में, विश्वासी इस समझ के साथ जीते थे कि स्वर्ग का राज्य वर्तमान युग में आरंभ हो रहा था, उस राज्य का संपूर्ण अनुभूति शीघ्र ही उन पर आ जाएगी। साथ ही, परमेश्वर वर्तमान में, परमेश्वर के इस्राएल को निर्मल और शुद्ध कर रहा है जिससे कि वे एक "पवित्र कुँवारी" के समान (2 कुरिन्थियों 11:2), अपने दूल्हे से मिलने के लिए तैयार हो सकें। पतरस ने कहा **वह समय आ पहुँचा है कि पहले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए।** इस युग में, परमेश्वर ऐसे लोगों के बुलाने और उन्हें ढालने में रुचि रखता है जो उसकी भलाई और पवित्रता के गवाह ठहरेंगे। जब मसीही दुःख उठाते हैं, तो एक प्रकार से यह उन पर परमेश्वर के न्याय का आना है। विश्वासयोग्य लोगों के लिए इसका परिणाम विश्वास तथा भक्ति के लिए एक नई प्रतिबद्धता थी।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि जिस शब्द का अनुवाद "घराने" हुआ है वह यूनानी में मात्र "घर" (οἶκος, *ओइकोस)* नहीं है। रूपक अलंकार परमेश्वर के लोगों के विषय घराना नहीं घर कहता है। इसमें भिन्नता है। यदि पतरस मसीहियों को परमेश्वर का घराना कहता, तो इससे विश्वासियों की परस्पर निर्भरता की ओर ध्यान जाता, उस भावना की ओर जो पारिवारिक संबंधों से आती है। परन्तु, पतरस का ध्यान इस ओर नहीं जा रहा है। पतरस ने 2:5 के मन्दिर के चित्रण को छोड़ नहीं दिया है। विश्वासी एक साथ मिलकर परमेश्वर का घर, उसका पवित्र मन्दिर बनते जाते हैं। यद्यपि 1 पतरस में "कलीसिया" शब्द नहीं मिलता है, यहाँ कलीसिया ही है जिसके बारे में विचार चल रहा है।

पतरस ने भी "घर" शब्द का वैसा ही प्रयोग किया जैसा पौलुस ने किया: "कि यदि मेरे आने में देर हो तो तू जान ले, कि परमेश्वर का घर [ओइकोस], जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया (ἐκκλησία, *एक्क्लेसिया)* है, और जो सत्य का खंभा, और नींव है; उस में कैसा बर्ताव करना चाहिए" (1 तीमुथियुस 3:15)।

जैसे परमेश्वर इस्राएल में करता था, वैसे ही वह अपनी कलीसिया से प्रेम करता और उनके मध्य में विचरण करता है। उसकी यह माँग है कि उसके लोग पवित्र हों। उसके द्वारा उनका न्याय करना इस बात का प्रमाण था कि वे उसके थे। उसने उन पर ताड़ना की अग्नि उन बातों के लिए भेजी जिन बातों के करने की अवहेलना वह उनके आस-पास वाली जातियों के लिए कर चुका था। उसने उनका वैसा बनना कदापि स्वीकार नहीं किया, जैसा वे जातियाँ बन चुकी थीं। "जो बात तुम्हारे मन में आती है कि हम काठ और पत्थर के उपासक हो कर अन्यजातियों और देश-देश के कुलचों के समान हो जाएंगे, वह किसी भांति पूरी नहीं होने की" (यहेजकेल 20:32)। जैसे परमेश्वर ने इस्राएल को निर्मल किया, वह उन्हें भी कर रहा था जिन्हें उसने बुलाया था। पत्री में केवल यहीं पर पतरस ने शब्द "न्याय" (κρίμα, *क्रिमा)* का प्रयोग किया है, जब कि इससे संबंधित क्रिया "न्यायी" को वह अनेक बार प्रयोग कर चुका है। दुःख उठाना आनन्दित होने और परमेश्वर की महिमा करने का अवसर था क्योंकि दुःख उठाना गवाही था (1) उस प्रभाव का जो परमेश्वर संसार पर अपने लोगों के द्वारा ला रहा था, और (2) उस पवित्रता की छवि का जिसमें वह अपने लोगों को ढाल रहा था।

प्रेरित का तर्क छोटे से लेकर बड़े तक के लिए था, यद्यपि उसने यह अपने पाठकों की कल्पना पर छोड़ दिया था कि उनपर लाए गए क्लेश की तुलना में परमेश्वर कितना बड़ा क्लेश अनाज्ञाकारियों के जीवनों में लाएगा। यदि परमेश्वर जिनसे प्रेम करता है उनका न्याय करता है, उन्हें निर्मल करता है, तो **उनका क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते?** वर्तमान युग में परमेश्वर अपने लोगों के लिए दुःख आने देता है, उन्हें निर्मल और शुद्ध करने के लिए, जबकि वह अनाज्ञाकारियों की अनदेखी करता है। "उसकी महिमा के प्रकट होने पर" (4:13; देखें 1:7; 5:1) जो उसके द्वारा निर्मल किए गए हैं उनके लिए कल्पना से परे आनन्द होगा, और जिन्होंने "परमेश्वर के सुसमाचार" की ओर अपनी पीठ मोड़ी है, कल्पना से परे दुःख। "परमेश्वर का सुसमाचार" वह सन्देश है कि परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञाओं के अनुसार अपने पुत्र को भेजा, वह पुत्र मनुष्यों के पापों के लिए मर गया, और परमेश्वर ने मृतकों में से पुनरुत्थान के द्वारा उसे अपना पुत्र घोषित किया। यह वह सुसमाचार है जिसे पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:1-4 में संक्षिप्त किया।

आयत 18. पतरस ने अपने तर्क को दृढ़ करने के लिए नीतिवचन 11:31 का उद्धरण किया। यह उद्धरण अनुवाद (LXX) से शब्दशः है, एक बहुत छोटे से अंश के लोप होने को छोड़ कर। यह असंभाव्य है कि यह खण्ड पतरस द्वारा, अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए, बाद में विचार कर के लिखा गया हो। प्रेरित ने 4:12 में आरंभ हुई विचारों की श्रृंखला से इस लेख का मार्गदर्शन पाया होगा। इस

जीवन का दुःख वह स्थान था जहाँ परमेश्वर अपने चुने हुओं को उसके साथ जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार कर रहा था। वह न्याय जो अनाज्ञाकारियों के लिए दुःख लाएगा और भी बहुत अधिक कठोर होगा।

इस आयत को KJV अनुवाद करती है, "यदि धर्मी कठिनाई से बचने पाते हैं, तो भक्तिहीन पापी कहाँ होंगे?" शब्दों से गलत समझे जाने की संभावना है। पाठक यह समझ सकते हैं कि धर्मी बड़ी कठिनाई से बचने पाएंगे। पतरस ऐसा कोई विचार नहीं रखना चाहता था। वरन, वह कह रहा था कि धर्मियों को बचने के मार्ग पर कठिनाइयों से होकर निकलना पड़ेगा। परमेश्वर के न्याय होने और उसकी महिमा के प्रगट होने के समय तक दुःखों के होने की अपेक्षा होनी चाहिए। यदि ऐसा है तो फिर, उसने एक आलंकारिक प्रश्न पूछा, "उन लोगों के लिए जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते हैं, क्या कोई भी कल्पना कर सकता है कि परमेश्वर ने कितने घोर दुःख रखे होंगे?" अन्त में धर्मी बचाए जाएंगे। इस बात पर कोई सन्देह नहीं है। जो संशय है वह इस बात पर है कि परमेश्वर ने कैसे घोर दुःख भक्तिहीनों और पापियों के लिए रखे हैं। इस आयत के भक्तिहीन और पापी वे ही लोग हैं जो पिछली आयत में परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते हैं। नीतिवचन का यह खण्ड एक ही साथ प्रोत्साहन का शब्द विश्वासियों के लिए है क्योंकि अन्ततः वे निर्दोष ठहरेंगे, और उनके लिए जो सुसमाचार को नहीं मानते हैं चेतावनी का शब्द भी है।

आयत 19. जैसा नए नियम में अन्य स्थानों पर आया है, परलोक विद्या नैतिकता की सेवा करती है। प्रभु के लौट कर आने और उसके द्वारा सन्तों तथा पापियों के न्याय का उल्लेख इस बात को स्मरण करवाता है कि इस युग में परमेश्वर के लोगों से पवित्रता की अपेक्षा की जाती है। विश्वासियों को अपने इस संकल्प को दोगुना दृढ़ कर लेना चाहिए कि वे वैसे लोग बनेंगे जैसा मसीह ने उन्हें बनाया है। अपनी दूसरी पत्री में, पतरस ने अन्तिम न्याय के स्पष्ट वर्णन के पश्चात पूछा, "जबकि ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलने वाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए!" (2 पतरस 3:11)।

जब यीशु ने दुःख उठाया, जब वह भक्तिहीनों के द्वारा निन्दित हुआ, तो उसने "अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपा था" (1 पतरस 2:23)। उसके अनुयायियों को भी ऐसा ही करना है। **परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुःख उठाना** निर्दोष होने पर भी दुःख उठाना है, जैसा यीशु ने निर्दोष होने पर भी दुःख उठाया। जो लोग अपने आप को परमेश्वर के हाथों में छोड़ देते हैं परमेश्वर उनके लिए दुःखों को अन्तिम नहीं मानता है। परमेश्वर उनके लिए दुःख नहीं चाहता है, वरन यह कि उसके सन्त ऐसे लोग हों जिनके जीवन संसार को दोषी ठहराएं, जिनके जीवन उनके ईश्वरीय व्यवहार की पृष्ठभूमि से संसार के पापों को प्रकट करें। जब सन्त ऐसा करते हैं तो संसार उन्हें दुःख देगा। ऐसा दुःख "परमेश्वर की इच्छा के अनुसार" है। यह वह दुःख है जो थोड़े समय का है। जब विश्वासी ऐसी परिस्थितियों में दुःख उठाते हैं तो परमेश्वर की महिमा होती है।

क्योंकि मसीही परमेश्वर की महिमा के प्रकट होने की प्रतीक्षा में जी रहे थे,

क्योंकि वह शीघ्र प्रकट होने वाली थी, वे भी, मसीह के समान, अपने-**अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृजनहार के हाथ में सौंप दें**। शब्द "प्राण" का सरल अर्थ है व्यक्ति। यहाँ "प्राण" को "शरीर" की तुलना में नहीं रखा गया है। क्रिया "सौंप दें" (παρατίθημι, *पारातिथेमी)* वही है जिसका प्रयोग यीशु ने क्रूस पर किया था हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं (लूका 23:46), यद्यपि यह कदापि निश्चित नहीं है कि पतरस ने यह शब्द इसलिए प्रयोग किया क्योंकि उसे यीशु का वाक्य स्मरण था। प्रेरित के लिए महत्वपूर्ण बात यह थी कि उसके पाठक "अपने प्राणों को सौंप दें," और सदा इस बात में निश्चित रहें कि **वे भलाई करते हुए** उसमें बने रहेंगे।

पुराने नियम में, सृष्टि के सृजन में परमेश्वर की भूमिका कोई असामान्य विषय नहीं है। यह कुछ अचरज की बात है कि नए नियम में यहाँ आकर ही परमेश्वर को "सृजनहार" कहा गया है। पतरस ने परमेश्वर को सृजनहार संभवतः इसलिए कहा जिससे उसके पाठक स्मरण कर सके कि जिसने सृष्टि तथा मानवजाति की रचना की वह निश्चय ही अनाज्ञाकारियों को न्याय के लिए बुलाने में सक्षम है। यह कि वह "विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता" है आश्वस्त करने वाला है। परमेश्वर कभी अपनी प्रतिज्ञाओं में असफल नहीं रहा है। वह "विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता" न तो अपने लोगों को बचाने में असफल होगा, और न ही उसका नाम धारण करने वालों को अनुचित सताने वालों का न्याय करने में असफल होगा।

पतरस और उसके पाठकों की आशा थी कि परमेश्वर का न्याय शीघ्र ही प्रकट हो जाएगा। संपूर्ण नए नियम में यह आशा व्याप्त है। वे इस आशा की पूर्ति हुए बिना ही जीए और मर गए। प्रत्येक युग में विश्वासी, इस युग में भी, यदि उन्हें अपने नए नियम के समय के भाइयों और बहनों का अनुसरण करना है, तो उन्हें इसी आशा में जीना होगा। क्योंकि पतरस के पाठकों के जीवन काल में परमेश्वर अपने न्याय के साथ प्रकट नहीं हुआ इसका यह तात्पर्य नहीं है कि वह अपनी प्रतिज्ञा के प्रति असफल रहा है। मसीही जीवन का मार्गदर्शन करने वाला सितारा पूर्ति होने की आशा है, न कि पूर्ति का होना। अवश्य है कि किसी दिन, परमेश्वर के चुने हुए समयानुसार, इतिहास का अन्त भी होगा। प्रभु प्रकट होगा। वह समय कब आएगा, यह निर्धारित करना परमेश्वर का कार्य है। उसके लोगों का कार्य है कि वे इसकी प्रतीक्षा में जीएं। कोई यह तर्क दे सकता है कि सदियों के बीतने से इस आशा को ताज़ा रखना कठिन है। लेकिन ऐसा उनके लिए नहीं है जो यीशु को अपने जीवन का साथी बना लेते हैं, जो उसके नाम के लिए दुःख उठाते हैं। दुःख उठाना प्रभु की गवाही है कि वह फिर से आएगा। प्रभु के लौट के आने की आशा, और प्रभु के शीघ्र लौट के आने की आशा में बहुत भिन्नता है। विश्वासियों को विश्वासयोग्य और दृढ़ बने रहने के लिए वह दूसरी बात उन्हें प्रेरणा देती है।

अनुप्रयोग

मसीह के दुःखों में संभागी होना (4:13)

फिलिप्पीन्स में एक धार्मिक समूह है जिसने अन्तर राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त की है। प्रति वर्ष ईस्टर के समय में उनमें से कुछ अपनी पीठ पर क्रूस बंधवा लेते हैं, और शेष उनके पीछे जलूस में चलते हैं। एक निश्चित स्थान पर पहुँच कर उन पुरुषों को क्रूस पर कीलों से ठोका जाता है और थोड़ी सी देर के लिए हवा में उठाया जाता है। जो लोग ऐसा करते हैं निश्चय ही वे गंभीर हैं, परन्तु मैं निश्चित हूँ कि मसीह के दुःख उठाने का अर्थ इससे सर्वथा भिन्न है। जब मसीही उसके दुःख में संभागी होते हैं, उस अभिप्राय से जिस से 1 पतरस 4:13 के पाठक संभागी हुए थे, तो ऐसा इसलिए होगा क्योंकि वे भी उसी प्रकार जीते और सिखाते हैं जैसा प्रभु जीता और सिखाता था।

कार्यप्रणाली और उपाय बदल जाएंगे, परन्तु जहाँ भी ऐसे लोग होंगे जो गंभीरता से प्रयास करेंगे कि वे वैसे जीएं और सिखाएं जैसे यीशु जीता और सिखाता था, तो सताव उनका पीछे अवश्य आएगा। पौलुस स्पष्ट था जब उसने कहा, "पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे" (2 तीमुथियुस 3:12; KJV)। यह कैसा विरोधाभास है कि शान्ति का राजकुमार कहता है, "क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूं? मैं तुम से कहता हूं; नहीं, वरन अलग कराने आया हूं" (लूका 12:51; KJV)। प्रेरित पतरस ने अपने पहले पाठकों को कुछ व्यावहारिक परामर्श दिया जो उन सभी मसीहियों के लिए बहुमूल्य संसाधन था, जिन्हें यीशु को मसीह अंगीकार करने के लिए सताव झेलना था।

समाप्ति नोट्स

[1]जे. रैमसी माईकल्स द्वारा किए गए दावे के विरुद्ध, 1:6-9 में दी गई तीव्रता का 4:7-11 में दिए गए उपदेशों और प्रशंसा की तुलना में नम्र का 4:12 की तीव्रता पर कोई विशेष प्रभाव नहीं है। जैसे ही 4:12 का आरंभ होता है, यकायक चेतावनी की घंटी बजने लगती है। देखें जे. रैमसी माईकल्स, *1 पीटर,* वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 49 (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1988), 258. [2]प्लिनी *लेटर्स* 10.96. [3]एडवर्ड गॉर्डन सेल्वेन, *द फर्स्ट एपिस्टल ऑफ पीटर: द ग्रीक टेक्सट, विद इन्ट्रोडक्शन, नोट्स, एण्ड एस्सेस,* थॉर्नऐप्प्ल कॉमेन्ट्रीस, दूसरा संस्करण (लंडन: मैक्मिलन और कंपनी 1947; रिप्रिन्ट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1981), 222-24. [4]मिकाइल्स, 264-65. [5]पूर्वोक्त, 267. [6]पतरस द्वारा दिया गया अधिकारियों के प्रति समर्पित रहने का निर्देश साहित्यिक शैली कह कर बरखास्त नहीं किया जा सकता है। प्राचीन संसार में घरेलू नियमावलियों को लेकर बहुत अनिश्चितताएं हैं, परन्तु यदि हम मान भी लें कि पतरस ने नियमावली का प्रयोग किया, तो भी उसने नियमावली के उन भागों का प्रयोग किया जो समाज के साथ मसीही रीति से व्यवहार करने की उलझन में फंसे उसके पाठकों को निर्देश देने के लिए उचित थे। [7]उदाहरण स्वरूप, इग्नेशियस *रोमियों* 3.2; *मैग्नेशियन्स* 4.1; *इफिशियन्स* 11.2. [8]*डीडाखे* 12.4.